

Sample

ॐ गं गणपतये नमः

शुभ

ॐ

लाभ



लाल किताब

**Astroinsight**

Delhi NCR

[www.astroinsight.in](http://www.astroinsight.in)

E-mail : [support@astroinsight.in](mailto:support@astroinsight.in)

## लालकिताब जन्मपत्रिका

लाल किताब की इस जन्मपत्रिका में जन्मकुण्डली, दशा, ग्रह स्पष्ट, लाल किताब कुण्डली व वर्ष कुण्डली के साथ यह भी बताया गया है कि आपका एवं परिवार का स्वास्थ्य कैसा रहेगा एवं उनका आपके प्रति व्यवहार कैसा रहेगा। इसमें रत्न कौन सा धारण करें व अन्य उपायों के साथ ग्रह फल, दशा फल व वर्षफल आदि भी दिए गए हैं। प्रयत्न किया गया है कि जातक को जिस प्रकार की जानकारी प्राप्त करने की अभिलाषा रहती है वह पूरी तरह दी जा सके।

लालकिताब जन्मपत्रिका को ध्यान से पढ़ने पर आपको यह मालूम होगा कि आपके साथ क्या घटना घटित हो रही है। ग्रहों के आधार पर यह भी बताया गया है कि अमुक जातक को पूजा-पाठ करना चाहिए या नहीं। वर्षफल में जिन सावधानियों को बरतने के लिये कहा गया है, उन सावधानियों के प्रति आजीवन सतर्क रहें। जो बातें आपके लिये शुभ लिखी गयी है, उनको अपने जीवन में अवश्य अपनाएं एवं जिन बातों को आपके लिये अशुभ लिखा गया है उन बातों को निश्चय कर हमेशा के लिये त्याग दें।

इस लालकिताब में व्यवसाय, कारोबार, नौकरी आदि के बारे में भी बतलाया गया है। इनसे संबंधित आपके लिये क्या लाभदायक रहेगा और क्या हानिकारक रहेगा इसकी विशेष जानकारी दी गयी है। जीवन में अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए लालकिताब के उपाय जिस समय तथा जिन आयु में करने के लिए कहे गये हैं उन्हीं आयु में ही करें।

लालकिताब में जीवन में आने वाली कठिनाईयों का समय भी दर्शाया गया है। जीवन में कब कहां और जीवन के किस मोड़ पर कौन सी परेशानी आ सकती है यह तो बताया ही गया है साथ ही इनसे बचने के उपाय भी बताये हैं। यदि आपका समय अच्छा चल रहा है और आप अपने लिए दिये गये उपाय कर रहे हैं तो आपके भाग्य का फल कई गुना बढ़ जायेगा और यदि प्रतिकूल समय में आप यह उपाय कर रहे हैं तो आपका बुरा समय धीरे-धीरे नष्ट हो जायेगा एवं सफलता आपके कदमों को चूमेगी।

सभी जातकों से अनुरोध है कि इस लालकिताब जन्मपत्रिका को अपने जीवन में केवल मार्गदर्शक के रूप में ही उपयोग करें व इसके अक्षराक्षर पर निर्भर न रहें। इस पत्रिका में हमने अनेक शास्त्रों की सहायता लेकर आपके लिए फलादेश दिए हैं लेकिन विभिन्न कारणवश इसकी कोई गारंटी नहीं ली जा सकती कि यह पूर्ण रूपेण सत्य ही हो। अतः जातक इस पत्रिका पर आधारित निर्णय के लिए स्वयं ही जिम्मेदार होंगे।

## Sample

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 14/01/1982  
दिन \_\_\_\_\_: गुरुवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 10:21:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 07:43:55 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Delhi  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 28:39:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 77:13:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:21:08 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 09:59:52 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:08:57 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 17:33:12 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:15:25 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:44:58 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:29:32 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शिशिर  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 00:05:27 मकर  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 26:50:59 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र  
लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: कुम्भ – शनि  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: सिंह – सूर्य  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: उ०फाल्गुनी – 1  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: सूर्य  
योग \_\_\_\_\_: शोभन  
करण \_\_\_\_\_: तैतिल  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: गौ  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: वनचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: श्वान  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: टे-टेकचंद  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र – रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मकर

## Sample

### पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1903	पौष	24
पंजाबी	संवत : 2038	माघ	1
बंगाली	सन् : 1388	पौष	30
तमिल	संवत : 2038	थई	1
केरल	कोल्लम : 1157	मकरम	1
नेपाली	संवत : 2038	माघ	1
चैत्रादि	संवत : 2038	माघ	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2038	पौष	कृष्ण 5

#### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 5  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 15:34:41  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 5  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : पू०फाल्गुनी  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:56:42 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : उ०फाल्गुनी  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : शोभन  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:53:13 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : शोभन  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 15:34:41 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
भयात \_\_\_\_\_ : 03:30:44  
भभोग \_\_\_\_\_ : 61:21:10  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : सूर्य 5 वर्ष 7 मा 24 दि

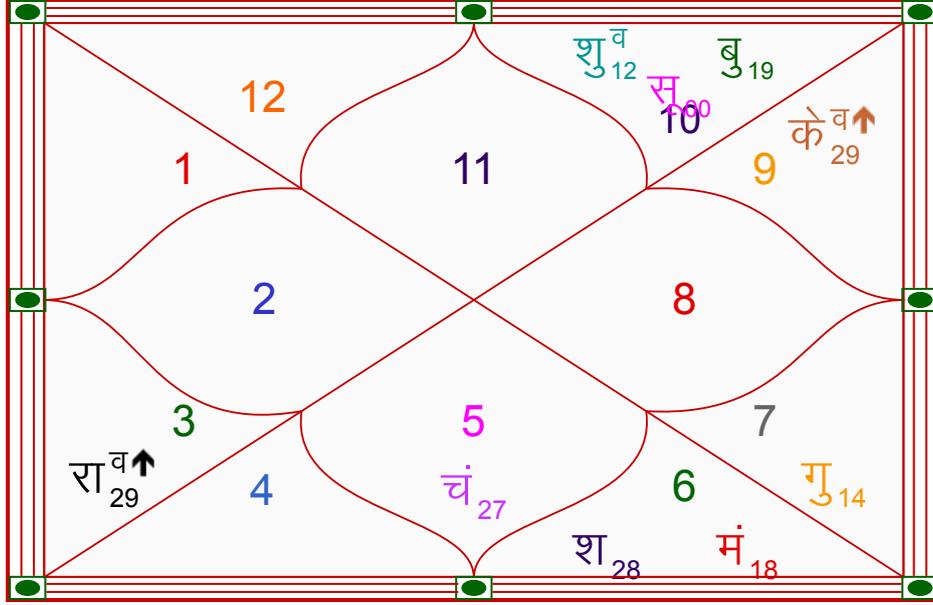
#### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : ज्येष्ठ  
तिथि \_\_\_\_\_ : 3-8-13  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मूल  
योग \_\_\_\_\_ : धृति  
करण \_\_\_\_\_ : बव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मेष  
लग्न \_\_\_\_\_ : मीन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : धनु  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मकर  
मंगल \_\_\_\_\_ : मकर  
बुध \_\_\_\_\_ : तुला  
गुरु \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मीन  
शनि \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
राहु \_\_\_\_\_ : मेष

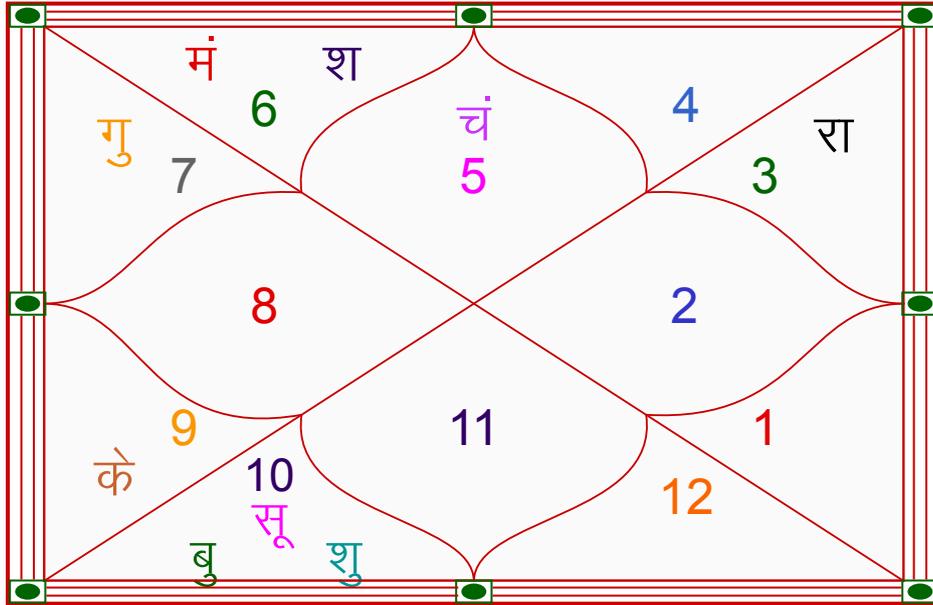
Sample

## जन्म कुण्डली

### लग्न कुण्डली



### चन्द्र कुण्डली



**Astroinsight**

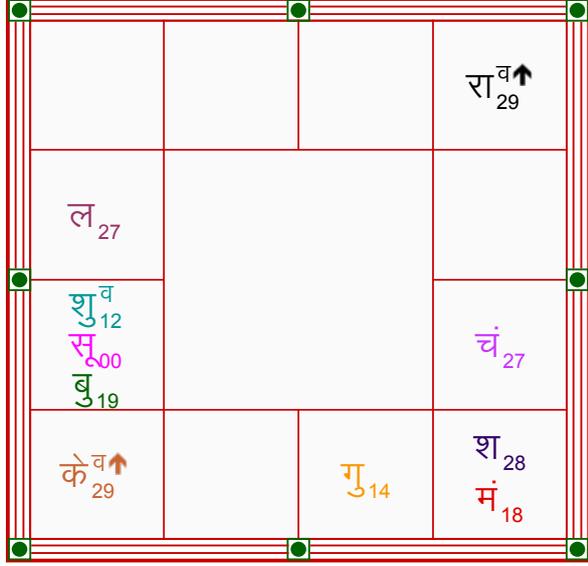
Delhi NCR

[www.astroinsight.in](http://www.astroinsight.in)

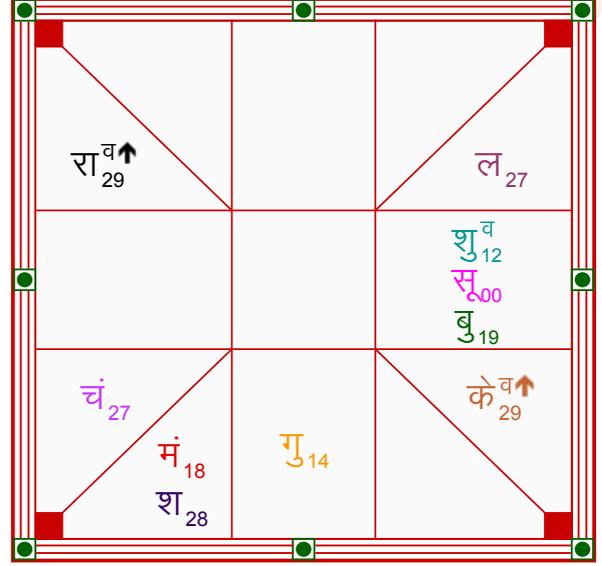
E-mail : [support@astroinsight.in](mailto:support@astroinsight.in)

## लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुण्डली



## लग्न कुण्डली



विंशोत्तरी  
सूर्य 5वर्ष 7मा 24दि  
सूर्य

14/01/1982

10/09/2101

सूर्य	09/09/1987
चन्द्र	09/09/1997
मंगल	08/09/2004
राहु	09/09/2022
गुरु	09/09/2038
शनि	09/09/2057
बुध	09/09/2074
केतु	09/09/2081
शुक्र	10/09/2101

योगिनी  
सिद्धा 6वर्ष 7मा 3दि  
संकटा

18/08/2024

18/08/2032

संकटा	29/05/2026
मंगला	19/08/2026
पिंगला	28/01/2027
धान्या	28/09/2027
भ्रामरी	18/08/2028
भद्रिका	28/09/2029
उल्का	28/01/2031
सिद्धा	18/08/2032

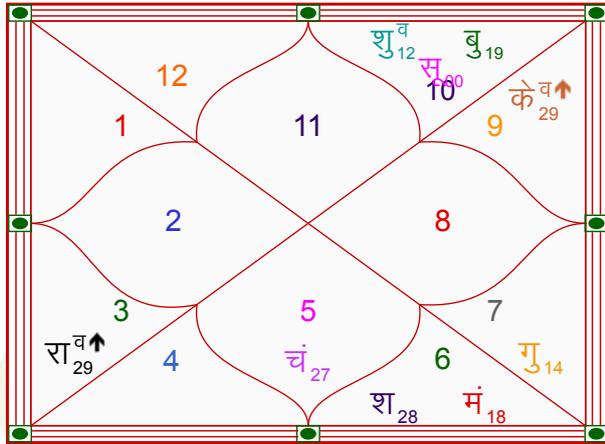
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	स्थिति	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
लग्न	कुम्भ	26:50:59	---	---	---	---	नेक
सूर्य	मकर	00:05:27	शत्रु राशि	---	---	---	नेक
चन्द्र	सिंह	27:26:30	मित्र राशि	---	---	---	नेक
मंगल	कन्या	18:25:09	शत्रु राशि	---	---	---	मन्दा
बुध	मकर	18:38:47	सम राशि	---	---	---	मन्दा
गुरु	तुला	14:12:35	शत्रु राशि	---	---	---	नेक
शुक्र	व मकर	11:38:55	मित्र राशि	---	---	---	नेक
शनि	कन्या	28:23:20	मित्र राशि	---	---	---	नेक
राहु	व मिथुन	28:50:03	उच्च राशि	---	---	---	मन्दा
केतु	व धनु	28:50:03	उच्च राशि	---	---	---	नेक

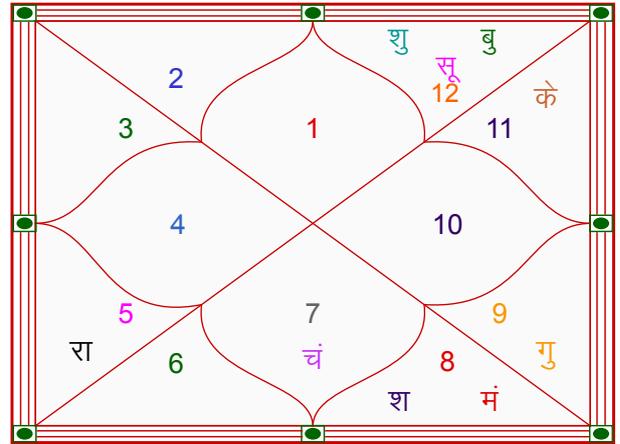
## भाव स्थिति

खाना नं.	मालिक	पक्का घर	किस्मत जगानेवाला	सोया	उच्च	नीच
1	मंगल	सूर्य	मंगल	हाँ	सूर्य	शनि
2	शुक्र	गुरु	चंद्र	---	चंद्र	---
3	बुध	मंगल	बुध	हाँ	राहु	केतु
4	चंद्र	चंद्र	चंद्र	हाँ	गुरु	मंगल
5	सूर्य	गुरु	सूर्य	---	---	---
6	बुध	बुध, केतु	केतु	हाँ	बुध, राहु	शुक्र, केतु
7	शुक्र	शुक्र, बुध	शुक्र	---	शनि	सूर्य
8	मंगल	मंगल, शनि	चंद्र	---	---	चंद्र
9	गुरु	गुरु	शनि	---	केतु	राहु
10	शनि	शनि	शनि	हाँ	मंगल	गुरु
11	शनि	शनि	गुरु	---	---	---
12	गुरु	गुरु, राहु	राहु	---	शुक्र, केतु	बुध, राहु

## लग्न कुंडली



## लालकिताब कुंडली:लग्न:



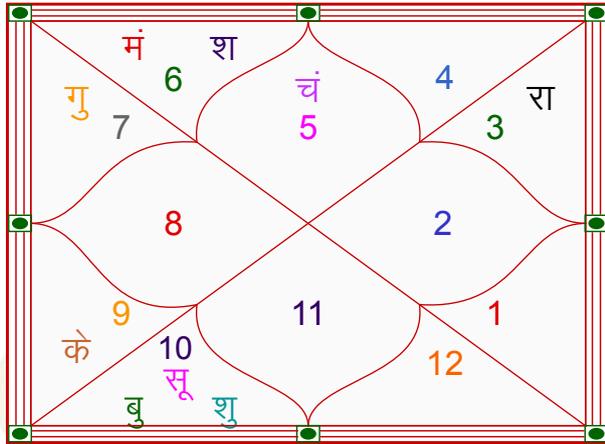
मैत्रीचक्र सारिणी

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
मंगल	मित्र	मित्र	---	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
बुध	मित्र	सम	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	सम	मित्र
शनि	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	सम	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	---	मित्र
केतु	शत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---

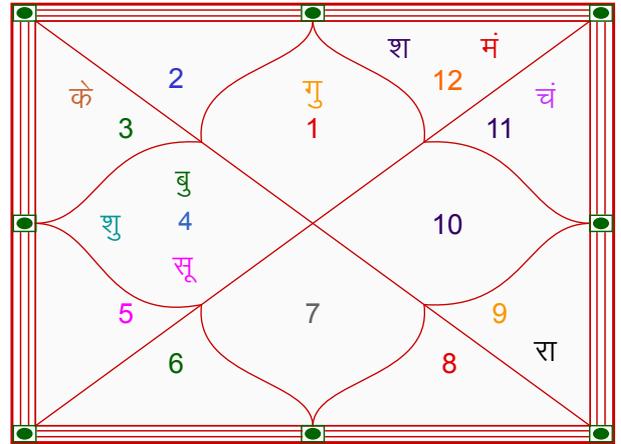
ग्रह/राशि फल

ग्रह	वर्णन	फल
सूर्य	सुख की नींद, मगर पराई आग से जल मरने वाला।	---
चंद्र	बच्चों की माता, खुद लक्ष्मी अवतार।	---
मंगल	मौत का फंदा।	ग्रह
बुध	नेक लंबी आयु मगर रात की नींद उजाड़ने वाला।	राशि
गुरु	धन का त्यागी।	ग्रह
शुक्र	कामधेनु गाय, लक्ष्मी।	---
शनि	हैड क्वार्टर।	---
राहु	शरारती, संतान गर्क मगर सूर्य को तारे।	---
केतु	गीदड़ स्वभाव कुत्ता।	---

चन्द्र कुंडली



लालकिताब चन्द्र



## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	26:50:59	511:48:07	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	---
सूर्य			मक	00:05:27	01:01:06	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	27:26:30	13:13:36	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि
मंगल			कन्या	18:25:09	00:20:25	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
बुध			मक	18:38:47	01:13:49	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	सम राशि
गुरु			तुला	14:12:35	00:07:01	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र	व		मक	11:38:55	00:30:58	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	मंगल	मित्र राशि
शनि			कन्या	28:23:20	00:01:48	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	मित्र राशि
राहु	व		मिथु	28:50:03	00:00:06	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	सूर्य	उच्च राशि
केतु	व		धनु	28:50:03	00:00:06	उत्तराषाढा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगल	उच्च राशि
हर्ष			वृश्चि	09:43:52	00:02:41	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
नेप			धनु	02:01:02	00:02:03	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	03:15:35	00:00:33	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	00:14:42	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	केतु	--

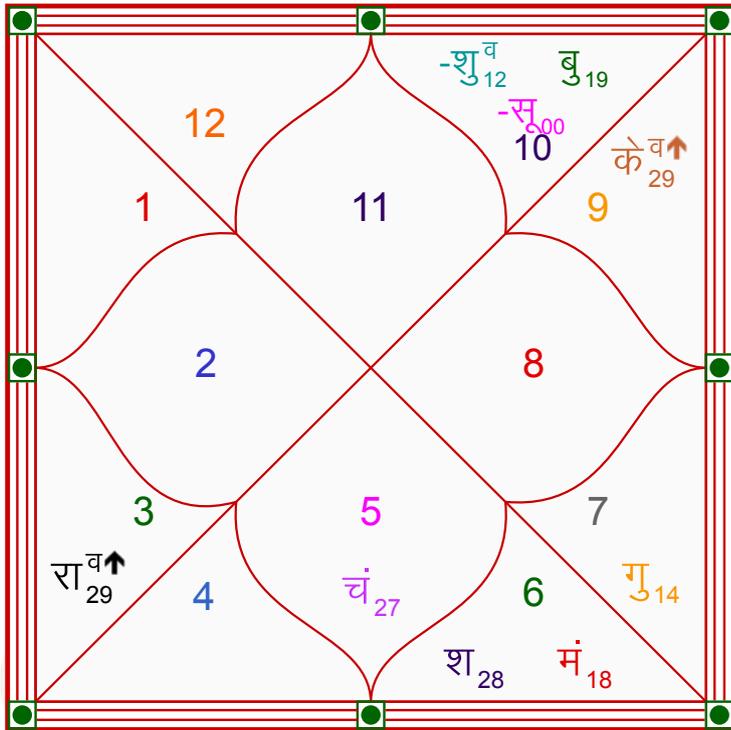
व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

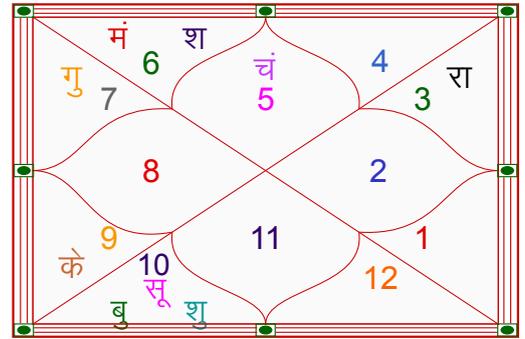
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:36:07

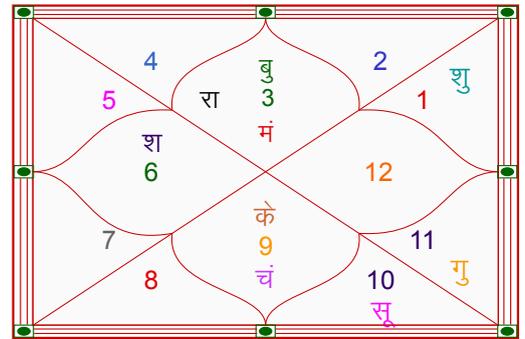
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 12:24:56	कुम्भ 26:50:59
2	मीन 12:24:56	मीन 27:58:53
3	मेष 13:32:50	मेष 29:06:47
4	वृष 14:40:45	मिथुन 00:14:42
5	मिथुन 14:40:45	मिथुन 29:06:47
6	कर्क 13:32:50	कर्क 27:58:53
7	सिंह 12:24:56	सिंह 26:50:59
8	कन्या 12:24:56	कन्या 27:58:53
9	तुला 13:32:50	तुला 29:06:47
10	वृश्चिक 14:40:45	धनु 00:14:42
11	धनु 14:40:45	धनु 29:06:47
12	मकर 13:32:50	मकर 27:58:53

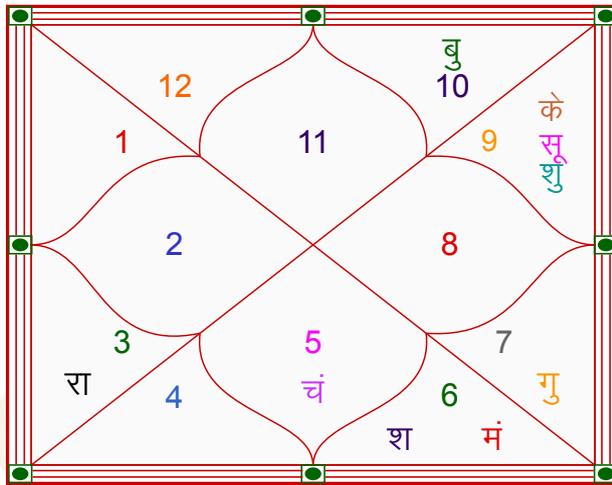
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	26:50:59
2	मेष	05:57:03
3	वृष	05:43:51
4	मिथुन	00:14:42
5	मिथुन	23:54:47
6	कर्क	21:02:36
7	सिंह	26:50:59
8	तुला	05:57:03
9	वृश्चिक	05:43:51
10	धनु	00:14:42
11	धनु	23:54:47
12	मकर	21:02:36

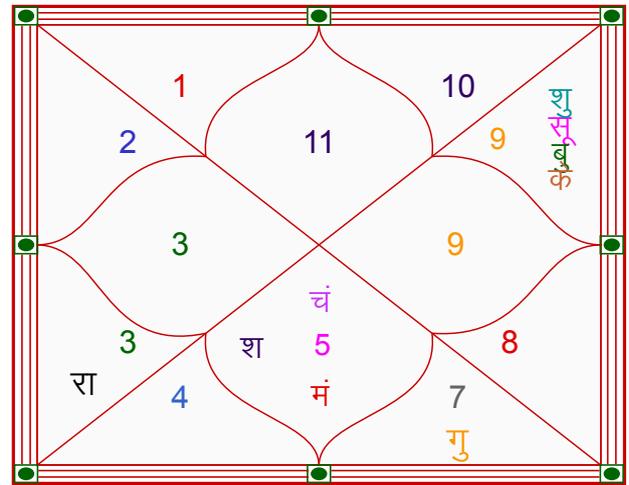
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## लालकिताब दशा

<b>शनि 6 वर्ष</b>		<b>राहु 6 वर्ष</b>		<b>केतु 3 वर्ष</b>		<b>गुरु 6 वर्ष</b>		<b>सूर्य 2 वर्ष</b>	
14/01/1982		14/01/1988		14/01/1994		14/01/1997		14/01/2003	
14/01/1988		14/01/1994		14/01/1997		14/01/2003		14/01/2005	
राहु	14/01/1984	मंगल	14/01/1990	शनि	14/01/1995	केतु	14/01/1999	सूर्य	15/09/2003
बुध	14/01/1986	केतु	14/01/1992	राहु	14/01/1996	गुरु	14/01/2001	चंद्र	15/05/2004
शनि	14/01/1988	राहु	14/01/1994	केतु	14/01/1997	सूर्य	14/01/2003	मंगल	14/01/2005
<b>चंद्र 1 वर्ष</b>		<b>शुक्र 3 वर्ष</b>		<b>मंगल 6 वर्ष</b>		<b>बुध 2 वर्ष</b>		<b>शनि 6 वर्ष</b>	
14/01/2005		14/01/2006		14/01/2009		14/01/2015		14/01/2017	
14/01/2006		14/01/2009		14/01/2015		14/01/2017		14/01/2023	
गुरु	15/05/2005	मंगल	14/01/2007	मंगल	14/01/2011	चंद्र	15/09/2015	राहु	14/01/2019
सूर्य	14/09/2005	शुक्र	14/01/2008	शनि	14/01/2013	मंगल	15/05/2016	बुध	14/01/2021
चंद्र	14/01/2006	बुध	14/01/2009	शुक्र	14/01/2015	गुरु	14/01/2017	शनि	14/01/2023
<b>राहु 6 वर्ष</b>		<b>केतु 3 वर्ष</b>		<b>गुरु 6 वर्ष</b>		<b>सूर्य 2 वर्ष</b>		<b>चंद्र 1 वर्ष</b>	
14/01/2023		14/01/2029		14/01/2032		14/01/2038		14/01/2040	
14/01/2029		14/01/2032		14/01/2038		14/01/2040		14/01/2041	
मंगल	14/01/2025	शनि	14/01/2030	केतु	14/01/2034	सूर्य	14/09/2038	गुरु	15/05/2040
केतु	14/01/2027	राहु	14/01/2031	गुरु	14/01/2036	चंद्र	16/05/2039	सूर्य	14/09/2040
राहु	14/01/2029	केतु	14/01/2032	सूर्य	14/01/2038	मंगल	14/01/2040	चंद्र	14/01/2041
<b>शुक्र 3 वर्ष</b>		<b>मंगल 6 वर्ष</b>		<b>बुध 2 वर्ष</b>		<b>शनि 6 वर्ष</b>		<b>राहु 6 वर्ष</b>	
14/01/2041		14/01/2044		14/01/2050		14/01/2052		14/01/2058	
14/01/2044		14/01/2050		14/01/2052		14/01/2058		14/01/2064	
मंगल	14/01/2042	मंगल	14/01/2046	चंद्र	14/09/2050	राहु	14/01/2054	मंगल	14/01/2060
शुक्र	14/01/2043	शनि	14/01/2048	मंगल	16/05/2051	बुध	14/01/2056	केतु	14/01/2062
बुध	14/01/2044	शुक्र	14/01/2050	गुरु	14/01/2052	शनि	14/01/2058	राहु	14/01/2064
<b>केतु 3 वर्ष</b>		<b>गुरु 6 वर्ष</b>		<b>सूर्य 2 वर्ष</b>		<b>चंद्र 1 वर्ष</b>		<b>शुक्र 3 वर्ष</b>	
14/01/2064		14/01/2067		14/01/2073		14/01/2075		14/01/2076	
14/01/2067		14/01/2073		14/01/2075		14/01/2076		14/01/2079	
शनि	14/01/2065	केतु	14/01/2069	सूर्य	14/09/2073	गुरु	16/05/2075	मंगल	14/01/2077
राहु	14/01/2066	गुरु	14/01/2071	चंद्र	16/05/2074	सूर्य	15/09/2075	शुक्र	14/01/2078
केतु	14/01/2067	सूर्य	14/01/2073	मंगल	14/01/2075	चंद्र	14/01/2076	बुध	14/01/2079
<b>मंगल 6 वर्ष</b>		<b>बुध 2 वर्ष</b>		<b>बुध 2 वर्ष</b>		<b>बुध 2 वर्ष</b>		<b>बुध 2 वर्ष</b>	
14/01/2079		14/01/2085		14/01/2085		14/01/2085		14/01/2085	
14/01/2085		14/01/2087		14/01/2087		14/01/2087		14/01/2087	
मंगल	14/01/2081	चंद्र	14/09/2085	चंद्र	14/09/2085	चंद्र	14/09/2085	चंद्र	14/09/2085
शनि	14/01/2083	मंगल	16/05/2086	मंगल	16/05/2086	मंगल	16/05/2086	मंगल	16/05/2086
शुक्र	14/01/2085	गुरु	14/01/2087	गुरु	14/01/2087	गुरु	14/01/2087	गुरु	14/01/2087

नोट : 35 साला लाल किताब दशा लगभग तीन चक्र के लिए दी गई है। उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

## रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्न:	नीलम	दुर्घटना से बचाव, कम खर्च, स्वास्थ्य
भाग्य रत्न:	हीरा	कम खर्च, सुख, भाग्योदय
कारक रत्न:	मूंगा	दुर्घटना से बचाव, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
शुभ उपरत्न:	लहसुनिया पुखराज	धनार्जन, भाग्योदय भाग्योदय, धनार्जन, धन

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र-जप / व्रत / दान / लाभ
<b>सूर्य</b>	पुखराज	83%	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
14/01/1982	लहसुनिया	66%	रविवार, गेहूँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
09/09/1987	हीरा	56%	कम खर्च, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
<b>चन्द्र</b>	पुखराज	77%	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
09/09/1987	हीरा	69%	सोमवार, चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
09/09/1997	लहसुनिया	66%	दम्पति, शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति
<b>मंगल</b>	लहसुनिया	84%	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
09/09/1997	पुखराज	83%	मंगलवार, मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
08/09/2004	हीरा	69%	दुर्घटना से बचाव, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
<b>राहु</b>	पुखराज	77%	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
08/09/2004	हीरा	75%	शनिवार, तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल
09/09/2022	गोमेद	72%	सन्तति सुख, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
<b>गुरु</b>	पुखराज	89%	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः बृहस्पतये नमः (19000)
09/09/2022	लहसुनिया	78%	गुरुवार, दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
09/09/2038	गोमेद	59%	भाग्योदय, धनार्जन, धन
<b>शनि</b>	पुखराज	77%	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
09/09/2038	हीरा	75%	शनिवार, उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
09/09/2057	गोमेद	66%	दुर्घटना से बचाव, कम खर्च, स्वास्थ्य
<b>बुध</b>	लहसुनिया	78%	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
09/09/2057	पुखराज	77%	बुधवार, मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
09/09/2074	हीरा	75%	कम खर्च, सन्तति सुख, स्वास्थ्य

## नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4-1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र
माणिक्य	ॐ घृणि सूर्याय नमः
मोती	ॐ सों सोमाय नमः
मूंगा	ॐ अं अंगारकाय नमः
पन्ना	ॐ बुं बुधाय नमः
पुखराज	ॐ वृं वृहस्पतये नमः
हीरा	ॐ शुं शुक्राय नमः
नीलम	ॐ शं शनैश्चराय नमः
गोमेद	ॐ रां राहवे नमः
लहसुनिया	ॐ कं केतवे नमः

### निषेध रत्न

हीरा, नीलम, गोमेद
गोमेद
हीरा, गोमेद, नीलम
---
हीरा, गोमेद
माणिक्य, मूंगा, पुखराज
माणिक्य, मूंगा, पुखराज
माणिक्य, मोती, मूंगा
---

### दान पदार्थ

गेहूँ, चंदन, घी, लाल वस्त्र
चावल, चीनी, घी, श्वेत वस्त्र
गेहूँ, ताम्र, गुड़, लाल वस्त्र
मूंग, कांसा, हरित वस्त्र
चने की दाल, गुड़, पीला वस्त्र
चावल, चांदी, श्वेत वस्त्र
काला तिल, तेल, काला वस्त्र
तिल, तेल, कंबल, नीला वस्त्र
सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र

## शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न – ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये ऐमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र – ॐ शं शनैश्चराय नमः

## Sample

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम् ॥**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी। आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। साथ ही वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगे।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसी मांगलिक

## Sample

कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

## कालसर्प योग

अग्ने राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं—

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है ।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं ।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

## अंक ज्योतिष फल

नाम	Sample
जन्म तिथि	14/01/1982
मूलांक	5
भाग्यांक	8
नामांक	6
मूलांक स्वामी	बुध
भाग्यांक स्वामी	शनि
नामांक स्वामी	शुक्र
मित्र अंक	3, 9, 8
शत्रु अंक	2, 4
सम अंक	1, 6, 7,
मुख्य वर्ष	1994,2003,2012,2021,2030,2039,2048,2057
शुभ आयु	12,21,30,39,48,57,66,75
शुभ वार	गुरु, बुध, शुक्र
शुभ मास	मार्च, मई, सित
शुभ तारीख	5, 14, 23
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना,बिलौर,मरगज
अनुकूल देव	लक्ष्मीनारायण
शुभ धातु	स्वर्ण
शुभ रंग	हरित
मंत्र	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रीं सः वृहस्पतये नमः
शुभ यंत्र	गुरु यंत्र

10	5	12
11	9	7
6	13	8

## अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 14 है। एक एवं चार के योग से आपका मूलांक 5 होता है। मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह है। एक अंक का सूर्य तथा चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु तथा पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह है। इन सभी ग्रहों का न्यूनाधिक मात्रा में आपके ऊपर प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी बुध के प्रभावश आप नौकरी की अपेक्षा व्यापार मार्ग का चुनाव करना अधिक पसन्द करेंगे। रोजगार आप ऐसा चुनेंगे, जहाँ लेखा, लेन-देन, वाणिज्य, यांत्रिकी जैसे कार्य संपादित हों। फ़ैक्ट्री, कम्पनी, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुध वाणी का दाता है। सूर्य प्रसिद्धि का, हर्षल परिवर्तन का। अतः आपके अन्दर वाक्पटुता, बुद्धि-विवेक अच्छा रहेगा एवं आपकी सामाजिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। मूलांक के प्रभाव से आपकी आर्थिक, सामाजिक स्थितियाँ परिवर्तनशील रहेंगी एवं परिवर्तन करते रहना आपको अच्छा लगेगा।

परिवर्तनशील गुण होने से आपके विचारों में समयानुसार, अवस्थानुसार बदलाव आता रहेगा। जो कि आपकी अन्तिम अवस्था तक चलेगा। इस क्रिया का अन्त में आपको लाभ अच्छा मिलेगा और आपका यश, नाम इत्यादि दीर्घकाल तक याद किया जाता रहेगा। आप अपनी कमियों का निरन्तर निरीक्षण करते रहेंगे तो निश्चित ही आप उक्त ग्रहों के प्रभाववश एक सफल व्यक्तित्व के धनी हो जायेंगे।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगे। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाएँ रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगे। आपकी सभी सफलताएं विधनों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगे। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे।

आपका मूलांक 5 है तथा आपका भाग्यांक 8 है। मूलांक 5 का स्वामी बुध है तथा भाग्यांक 8 का स्वामी शनि है। मूलांक 5 और भाग्यांक 8 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक दोनों के ही ठीक-ठीक प्रभाव प्राप्त होंगे। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप अपनी मेहनत से धीरे-धीरे सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ते हुए उन्नति प्राप्त करेंगे। धन संग्रह करने में आपको काफी मेहनत एवं बुद्धि का उपयोग करना पड़ेगा। तभी आप वांछित धन एकत्रित करने में

सफल होंगे । आपका भाग्योदय देर से, धीरे-धीरे, लेकिन स्थायी होगा। आप जीवन में जो भी कार्य करेंगे, उनमें रुकावट अवश्य आएंगी। आपके कार्यक्षेत्र में सबसे बड़ी बाधा आपका आलस्य रहेगा। यदि आप किसी भी कार्य को कल पर नहीं टालेंगे, तो सफलता आपके नजदीक रहेगी। श्रम शक्ति तथा कूटनीति के द्वारा आप जो भी कार्य सिद्ध करना चाहेंगे, उसमें सफल रहेंगे। युवा एवं मध्य अवस्था की अपेक्षा अंतिम अवस्था में आपके पास अच्छी धन-संपत्ति एकत्रित होगी। आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा उच्च कोटी की रहेगी तथा समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे।

आपका भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 35 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 44 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 5 की 3 एवं 9 से मित्रता है तथा भाग्यांक 8 की 1 एवं 4 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 5, 8, 9 के अंक विशेष घटना वाले रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो जाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, मई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 5 एवं भाग्यांक 8 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 3, 4, 5, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 5, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75

## Sample

4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67, 76

5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68, 77

8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

## लग्न फल

आपका जन्म पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में कुंभ लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर मिथुन का नवमांश एवं तुला राशि का द्रेष्काण भी उदित हुआ था। इस लग्नादिक समन्वय स्थिति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपके जीवन का प्रारूप चमत्कृत नियमावली में अंकित है। आपका जीवन गप-शप एवं सुखद वातावरण में व्यतीत होगा तथा आप पर्याप्त धन-दौलत से युक्त संपन्न एवं आपका घर-परिवार प्रसन्न रहेंगे।

आप धनोपार्जन के कलाकार एवं मास्टर हैं। आप दूसरे के साथ उदार भावनाओं से युक्त सहायता करने वाले हैं। आप शीघ्रता पूर्वक पर्याप्त मात्रा में धनोपार्जन कर उसे सुरक्षित कर सकेंगे। आप निश्चित रूप से आलसी नहीं हैं। आप महत्वपूर्ण विषयों का गहनतापूर्वक अध्ययन कर उस कार्यक्रम को विकसित करने के प्रति रुचिवान रहेंगे। आप धर्म दर्शन शास्त्र का सदैव अध्ययन कर सकेंगे। आपके लिए कार्य-व्यवसायों में अनुकूल धार्मिक एवं दार्शनिक कार्य, ज्योतिषीय कार्य, भाषा ज्ञान का कार्य शैक्षणिक कार्य एवं राजनीति के कार्य लाभदायक पथ हैं। आप इन चिहिनत कार्य-व्यवसायों में से कोई भी कार्य व्यवसायों का चयन कर सकते हैं।

आप वास्तव में उच्च स्तरीय विषयों पर चिंतन करने से दिलचस्पी रखते हो। आप मृत्यु के पश्चात जीवन की क्या गति होती है। इसके संबंध में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो। आप यदा-कदा ऐसा सोचते हैं कि सभी कुछ को त्याग कर जीवन दर्शन का ध्यान साधना करें।

अन्यथा आप अपने कार्य व्यवसाय के संबंध में अत्यंत व्यस्त रहने वाले व्यवस्थित प्राणी हैं। आप भीड़-भाड़ से बच कर सिर के बल सर्वप्रथम प्रमुख विषयों का अध्ययन कर अपनी कार्य योजना को विकसित करने की कार्य शैली पर विचार करते हो। दूसरी बात यह है कि आप अपने पक्ष में उत्कृष्ट पहुंच प्राप्त करने के लिए सामर्थ्यवान हैं। आप विधि पूर्वक किसी भी कार्य को संपन्न करने हेतु सक्षम प्राणी हैं।

परंतु आपके सभी समर्पित कार्य विश्वसनीयता के माध्यम से संचालित होता है। बल्कि आप धनोपार्जन हेतु कोई गलत ढंग मार्ग या पहुंच नहीं चाहते। आप दूसरों के माध्यम से उपर्युक्त विषयों के संबंध में (खुलम खुल्ला) प्रत्यक्ष रूप से अव्यवस्थित मूल्यांकन करना नहीं चाहते। आपसे संबंधित कुछ मित्र विजय श्री प्राप्त करना चाहते हैं। परंतु आपको सतर्क रहना चाहिए। आप अत्यंत सावधान रह कर, अपने निकट संबंधियों का ध्यान रखें, क्योंकि कुछ लोग आपकी योजना के प्रति धोखा-धड़ी करके आपकी सफलता को अवरुद्ध कर स्वयं आगे निकल जाएं।

जहां तक आपके समक्ष स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएं बिल्कुल ठीक हैं। परंतु आयु की वृद्धि के साथ-साथ कतिपय रोगादि सामान्य कुप्रभाव डाल सकते हैं, जिसके आधार पर आपको अधिक चिंताग्रस्त बना सकता है। अतः आप रक्तचाप, मिरगी, जॉनडिस, ट्यूमर आदि रोगों के प्रति समय-समय पर अपने चिकित्सक से विचार-विमर्श करना उत्तम होगा। आपके उत्तम घरेलू वातावरण के प्रभाव से भी आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप अपने गृहस्थाश्रम के संबंध में

भाग्यशाली हैं, क्योंकि आपके जीवन में बुद्धिमती पत्नी एवं समझदार पुत्र आपके आनंददायक जीवन में सहायक होंगे।

ऐसा संदेह है कि आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं अथवा नहीं? आप एक अत्यंत समृद्धिशाली व्यक्ति के समान धनी हो जाओगे। परंतु कुछ समय के बाद आप आवश्यकता के अनुरूप अपने को बना लेंगे। आप में एक परिश्रमी कार्यकर्ता के गुण विद्यमान हैं तथा आप धैर्यपूर्वक किसी कार्य के परिणाम की प्रतीक्षा करते हैं। सब कुछ के बाद आप धन को ही प्राथमिकता नहीं देते तथा निरंतर इसके पीछे नहीं पड़े रहते हैं। परंतु मात्र सांसारिक आवश्यकता हेतु आवश्यक है।

आप सदैव अंक 2, 3, 7 एवं 9 अंक पर भरोसा रख सकते हैं तथा इस अंक की प्रधानता देते हुए इसका व्यवहार अपने जीवन में कर सकते हैं क्योंकि ये अंक आपके लिए हितकर हैं। इसके अतिरिक्त अंक 1, 4, 5 एवं 8 अंक आपके लिए अव्यवहारणीय हैं।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सफेद, लाल, पीला एवं क्रीम रंग हैं। परंतु नारंगी, नीला एवं हरा रंग आपके लिए प्रतिकूल एवं अव्यवहारणीय हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन बुधवार, शनिवार एवं शुक्रवार का दिन लाभदायक है। परंतु शेष सोमवार, मंगलवार एवं रविवार, का दिन अव्यवहारणीय है।

## ग्रह फल

### सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र—द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

### चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा

## Sample

तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

### मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थायी रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

### बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

### गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान्, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

## Sample

### शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घ्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

### शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

### राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक— साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

### केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचलता के भाव से युक्त रहते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये प्रारम्भ से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही पसंद करते हैं अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव रहता है परन्तु धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है। साथ ही आधुनिकता के भाव से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रुचि के साथ साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा किसी भी प्रकार से भेद भाव की भावना इनमें नहीं रहती है अध्ययन के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल नेतृत्व प्राप्त करने में भी सफल रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश कार्य कलाओं को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे परन्तु मन में स्थिरता कम ही रहेगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आप सूक्ष्म दृष्टि के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप प्रारंभ से ही पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के रहेंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के द्वारा जीवन में सफलताएं अर्जित करेंगे। धनैश्वर्य की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके इच्छित धन होगा।

समाज में आप एक सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा सपरिवार उनका उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रुचिशील दौरान आपकी— उत्कृष्ट कार्यों से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। साथ ही यदा कदा आप आवश्यकता से अधिक व्यय करेंगे। अतः ऐसी प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा सुख

Sample

पूर्वक अपना जीवन यापन करने में समर्थ होंगे।

**Astroinsight**

Delhi NCR

[www.astroinsight.in](http://www.astroinsight.in)

E-mail : [support@astroinsight.in](mailto:support@astroinsight.in)

## लाल किताब ग्रह फल

### सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधू बनना चाहो तो साधू न बन कर जागीरदार बनेंगे। आपको बड़े-बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगे। नौकरी-व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद रहेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगे। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिलेगा या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधवा स्त्री से संबंध होंगे, अमानत में खयानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाले होंगे। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों, लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी-व्यापार में नुकसान उठाएंगे। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधवा स्त्री से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खयानत न करें।

उपाय :

1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल दें।

### चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको सुंदर पत्नी का सुख प्राप्त होगा। आप नेता, वकील, व्यापारी बन सकते हैं। खेती की जमीन से भी लाभ मिलेगा। मध्यम पढ़ाई का योग है। आपके घर में जल तथा दूध की व्यवस्था हमेशा रहेगी। आप स्वयं लक्ष्मी अवतार होंगे। आपकी योगाभ्यास, शायरी और ज्योतिष विद्या में रुचि होगी। आप आस्तिक और ईश्वर भक्त होंगे। आप सरकारी सर्विस में होंगे तो प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। उत्तम वाहन

सुख मिलेगा। दुनियादारी से मोहभंग हो जाएगा। आध्यात्म का फल श्रेष्ठ रहेगा। आप अपने पराक्रम से मिट्टी से सोने पैदा कर सकते हैं। धन-दौलत, जेवरात आदि की बरकत होगी। आपको सरकार से या किसी संस्था द्वारा सम्मान मिलेगा या आप विदेश में अधिक समय व्यतीत करेंगे। विदेश की यात्रा करेंगे। ईश्वर की भक्ति प्राप्त होगी। आपको जल से संबंधित चीजों से लाभ होगा। आप नये विषयों की खोज भी करेंगे।

यदि आपने परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, भूत-प्रेत की सिद्धि की, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया। माता या स्त्री से झगड़ा किया, 24-25 वर्ष आयु में विवाह हुआ तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से 2 वर्ष तक माता का स्वास्थ्य ढीला रहेगा या माता से अलग रहना पड़ सकता है। विवाह के बाद माता के सुख में कमी आ सकती है। माता का विरोध करना आपके लिए अशुभ होगा। आपको 24वें वर्ष में विवाह करना भावी संतान के लिए प्रतिकूल होगा। आपका चाल-चलन संदेहपूर्ण होगा। दूध और पानी को बेचने से संतान सुख में बाधा हो सकती है। आपकी पत्नी और आपकी माता का आपस में झगड़ा रहेगा, पत्नी से संबंध विच्छेद या दूरी का भय रहेगा या हो सकता है। मादक चीजों/द्रव्यों के प्रयोग से आपकी बर्बादी होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. दूध-पानी माल न बेचें।

उपाय :

1. दूध पानी का दान करें।
2. विवाह के बाद पत्नी की डोली आपके घर में आने से पहले पत्नी के वजन के बराबर चावल या दरिया का पानी कायम करें।

### मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से लाल किताब के अनुसार आठवें खाने में मंगल हो तो व्यक्ति मंगलीक होता है। आप मांगलिक पुरुष हैं। आपको माता-पिता का पूरा सहारा मिलेगा। आपको गृहस्थी का पूरा सुख मिलेगा। आपका हौसला बुलंद रहेगा। आप लौह पुरुष होंगे। आप नतीजा सोचे-समझे बिना, हिम्मत के साथ कष्टों का मुकाबला करेंगे। आप अपने काम-काज में मन लगा कर काम करने के आदी होंगे। आप इंसानों के लिए लड़ने को तैयार रहेंगे। आपके जीवन की रक्षा होती रहेगी। आप जीवन में बाधाओं को हंस कर सह लेंगे। ससुराल से संपत्ति का लाभ होगा। शत्रुओं पर जीत हासिल करेंगे या शत्रु भय से सामने न आयेगा।

यदि आपने विधवा स्त्री के साथ झगड़ा करके उसकी बददुआ ली, घर में जमीन के अंदर रहने वाली तंदूर-भट्टी हुई, लोगों से बिना कारण झगड़ा-फसाद किया, चाकू-छुरी हर समय अपने पास रखी तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारणवश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके छोटे भाई के लिए बेहद बुरा एवं भाई के कारण, लड़ाई-झगड़े होंगे। आपका भाई आपका बेड़ा गर्क कर सकता है। अचानक दुर्घटना से रक्त विकार हो सकता है या नाखून के दोष की आशंका है। किसी आदमी पर बेवजह गुस्सा करना, पछतावा का कारण बन सकता है। आप गुस्सा करके नुकसान भी उठा सकते हैं। आप पर कोई आक्रमण हो इस बात की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर के अंदर जमीन में तंदूर/भट्टी न रखें।
2. तोता या मैना न पालें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री का आर्शीवाद लें।
2. तंदूर में मीठी रोटी लगा कर कुत्तों को खिलावें।

### बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से अच्छी स्थिति बन सकती है। वैसे आपको धन-संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। आपकी बहन-लड़की अपने ससुराल में ही सुखी रहकर बसेगी। मगर अपने पिता के घर में दुःखी रहेगी। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये-लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदा असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल करेगा। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगे। सट्टे-लाटरी का काम या दलाली के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता के धन पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा। कभी-कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता के लिए अशुभ होगा। आपकी पत्नी का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :

1. स्टेनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

### गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति नौवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनी होंगे अर्थात् बड़े भाग्यशाली होंगे। आप अपने धर्म पर अडिग और वचन के पक्के होंगे परंतु आपके जीवन में कभी भी धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपको जौहरी या सर्राफी के काम करने से बहुत लाभ होगा। आपके घर की प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आप तीर्थ स्थान की यात्रा के शौकीन होंगे। आप धर्मात्मा, ज्योतिषी, वैद्य, सिद्ध पुरुष होंगे। आप अपने पूर्वजों के माध्यम से प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगे। भाग्य का श्रेष्ठ प्रभाव आपके ऊपर पड़ेगा यानि 36 वर्ष की उम्र में धन की प्राप्ति होगी। आप अच्छे, सम्मानित एवं अमीर खानदान में जन्म लेंगे। आप अपनी मेहनत से भी धन कमाएंगे। आपकी आदतें राजाओं जैसी होंगी। आप आध्यात्मिक तौर पर योगी स्वभाव के होंगे। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आपकी आयु के साढ़े सोलह वर्ष, 19, 33, 49 विशेष और धन प्राप्त करने वाले होंगे। आप तमाम दुनिया से लड़ कर अपनी किस्मत बना लेंगे अर्थात् आप स्वयं अपने भाग्य के निर्माता होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति को शुभ करने के लिए भाग्य पूरा साथ देगा। आपके गृहस्थ जीवन में सुख बढ़ेंगे। इसका शुभ असर पूरे परिवार पर अच्छा रहेगा।

यदि आपने धर्म छोड़ दिया या धर्म विरोधी कार्य किये, पिता से झगड़ा या विरोध किया, किया हुआ वायदा पूरा न किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपके जीवन में बुरा समय आए उससे पहले आप दुनिया से कूच कर जाएंगे। आप अपनी औलाद से कई बार दुःखी होंगे। आपको दिल की बीमारी की आशंका है। आपका सोना गिर जाये, चोरी हो, लूटा जाये, गिरवी पड़े या बिक जाएगा, यह बहुत अशुभ लक्षण है। आलस्य करने से आपके महत्वपूर्ण कार्य अधूरे रह जाएंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. सोना गिरवी न रखें, गुम होने से बचायें।

उपाय :

1. गंगा स्नान करें (हर महीने में एक बार 9 महीने लगातार)।
2. धर्म की पालना करें।

### शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी ज्योतिष, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी। आप अपने परिवार का पोषण करेंगे। राज्य पक्ष से अच्छा लाभ मिलेगा। आप हर प्रकार से सुखी रहेंगे। स्त्री के माध्यम से जो भी कार्य संपन्न होते हैं वह आपके लिए अच्छा होगा। आपके काम के सुनिश्चित परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आड़े समय में मददगार होगी। आपके जीवन में तरक्की की बागडोर आपकी पत्नी के हाथ में होगी। आप औरत की इज्जत करेंगे इसका अच्छा फल मिलेगा। विवाह के बाद काफी धन मिलेगा। स्त्री का पूरा सुख मिलेगा। आप सदैव ही दूसरों की सेवा हेतु तत्पर रहेंगे। आप जवानी में अपना समय ऐशो आराम से बिताएंगे। आपके मन में वहम समाया हुआ रहेगा। आप चित्रकला प्रिय अथवा गायन प्रिय होंगे। आप धर्माचरण करके शुभ प्रभाव को अपनाएंगे। आपको खेती-बाड़ी का लाभ भी मिलेगा। आप बेरहम होंगे फिर भी आपका मान-सम्मान बरकरार रहेगा। आपके पास बहुत जायदाद होगी।

यदि आपने पत्नी से अच्छे संबंध न रखे या पत्नी की सेहत खराब के समय देखभाल न की, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप बूढ़े होने पर दूसरे लोगों को अपने जीवन में भुगती बातों को सुना कर समय बर्बाद करेंगे। पत्नी बीमार रहा करेगी तो आपका भाग्य अच्छा नहीं रहेगा। कन्या संतान का आपके जीवन पर बुरा प्रभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. पत्नी के स्वास्थ्य का विघेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. गाय दान करें।
2. देसी घी का दीपक जलावें।

### शनि

आपकी जन्मकुंडली में आठवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप नये अविष्कार या विषयों की खोज करेंगे। आप मनमौजी होंगे। आर्थिक हालत सामान्य रहेगी। भागीदारी के काम से लाभ अधिक होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं तो आपको सरकारी

विभाग में धीरे-धीरे तरक्की प्राप्त होगी। आप विदेश की यात्रा भी करेंगे, ऐसी पूरी संभावना है। जैसे आपको जल से, जलीय पदार्थ या समुद्री यात्रा से लाभ हो सकता है, परंतु आपकी विदेश यात्रा पूर्ण संभावित है। आपको एक जगह बैठे रहने वाले स्थायी काम करना ही अच्छा है।

यदि आपने अपनी रिहाईश गली की नुक्कड़ पर या आगे बंद गली के घर में रखी, मकान में दरारें हुईं, घर से बिच्छू निकलते रहे, आप अपने नाम पर मकान बना लें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपको पिता का सुख कम ही प्राप्त हो सकता है। किसी भी दुर्घटना की आशंका है। आपके भाई आपसे शत्रुता कर सकते हैं। आपकी टांगों पर बुरा असर पड़ सकता है। शराब-मांस, अंडे का सेवन-भोजन आपको नीच बना देगा इसका सेवन नहीं करें। आपका बुढ़ापा गरीबी से गुजरे और बुढ़ापे में आंखों की दृष्टि कमजोर होने की आशंका है। आपके अभिमान के कारण नुकसान हो सकता है। कोई जवाबदेही पूर्ण कार्य से अथवा नीच कार्य से बहुत बड़ा नुकसान और पछतावे का कारण बन सकता है। आपको सरकार से भय रहेगा। अपने नाम पर मकान बना लेंगे तो असमय मौत को बुलावा हो सकता है। नौकरों द्वारा हानि का भय, संतान सुख में कमी हो सकती है। शराब-मांस, मछली का सेवन आपको हानि दे सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपने नाम से मकान न बनायें।
2. सांप न मारें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 किलो उड़द जल प्रवाह करें।

## राहु

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में राहु पड़ा है। आपकी 21 वर्ष आयु में प्रथम पुत्र और 42 वर्ष आयु में दूसरा पुत्र पैदा होगा। आपको पुत्रों का सुख मिलेगा, उम्मीद है। औलाद मूर्ख और आप ब्रह्मज्ञानी होंगे। आपकी औलाद से अधिक सुखी जीवन आपके पोते-पड़पोते का होगा। आप चंचल और अस्थिर बुद्धि के होंगे। आपकी माता का संपूर्ण जीवन बड़ा सुखमय समय रहेगा। धन-संपत्ति और औलाद में वृद्धि होगी। आपको भाई का सुख मिलेगा। आप परिवार और माया की ओर से सुखिया होंगे। धर्म-मर्यादा के मालिक होंगे। व्यापार आपके लिये सब उत्तम धन कमाने का साधन होगा, राज्याधिकारियों से लाभ होगा।

यदि आपने पत्नी से अच्छे संबंध न रखे, उससे तलाक लिया, बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब कर ली, पिता या ससुर से झगड़ा किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या

किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप बचपन में शरारती होकर पढ़ाई—लिखाई में मन नहीं लगाएंगे। शिक्षा अधूरी रह जाएगी या मन के मुताबिक पढ़ाई नहीं कर सकेंगे। संतान जन्म से 12 वर्ष पत्नी का स्वास्थ्य खराब रहेगा। पहली संतान नहीं बचे ऐसी शंका बनती है। पत्नी से तलाक या जुदाई हो, ऐसी शंका है। पत्नी से तलाक/जुदाई की तो संतान का सुख न मिलेगा। आप पाप कर्म में रत हो सकते हैं। आपको पुत्र का सुख न मिले। आपकी सेहत बिगड़ सकती है तथा बेकार का धन खर्च होगा। आपकी आंखों की दृष्टि में भी कोई दोष उत्पन्न हो सकता है। आपके काम करने का ढंग भी स्थिर नहीं रहेगा। काम की चीजों को भी इधर से उधर करते रहेंगे। अस्थायित्व और चंचलता के आप शिकार होंगे। आपका बड़ा भाई अमीर या निःसंतान होगा, ऐसी आशंका है। समय साढ़े दस, 21—42वां वर्ष पिता या ससुर की आयु पर भारी रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल—चलन ठीक रखें।
2. दूसरा विवाह न करें।

उपाय :

1. चांदी का ठोस हाथी घर पर रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज के नीचे चांदी की पत्ती लगाएं।

नोट : यदि दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले मकान में रिहाईश हो तो भी उपरोक्त उपाय जरूर करें।

## केतु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप बहुत धन—दौलत के मालिक होंगे। इसके श्रेष्ठ फल से आप निहाल हो जाएंगे। आपको अपने भविष्य के लिए जागरूक रहना चाहिए। आपको राजपक्ष से शासन से संबंधित कार्यों में अच्छा फल मिलेगा। खानदानी जायदाद से अधिक जायदाद अपने हाथों से बना लेंगे। आपके जीवन में उत्तम राजयोग की संभावना है। आप सरकार पक्ष से या सम्मानित व्यक्ति से लाभ प्राप्त करेंगे। आप यदा—कदा हिम्मत हार बैठेंगे। आपकी औलाद शारीरिक तौर पर अच्छे स्वभाव की और अच्छे काम करने वाली होगी।

यदि आपको काम पर जाते समय कोई पीछे से कोई आवाज दे, माता से झगड़ा या माता का विरोध किया, पुत्र संतान का लालन—पालन अच्छी प्रकार न किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से संतान पक्ष को कुछ कष्ट की आशंका है। मां के साथ आपके मधुर संबंध में न्यूनता की आशंका है या माता को

आपकी संतान से सुख नहीं मिलेगा। आपको हमेशा ही पेट में दर्द की बीमारी लगी रह सकती है। आपके पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् माता के सुख का अभाव हो जाएगा। माता की आंखों का आप्रेशन हो सकता है। बल्कि कुछ सुस्त या नामर्दी भी महसूस करेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शुभ काम पर जाते समय पीछे से कोई आवाज दे तो शुभ काम पर न जाएं।
2. व्यतीत समय को याद न करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता न पालें।
2. काले-सफेद पत्थर के चकले पर रोटी बेल कर बनायें।

## लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुंडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुंडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

### स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटा-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

### मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना

## Sample

खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

### पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

### कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्यमय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

### पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती हैं।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

### स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात् दूसरा विवाह होना आदि।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

### निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिद्धियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं,

हथियार से मौत होना आदि।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से मुक्त है।

### आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य, मंगल या शुक्र या तीनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालों की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

### ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बीमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना

आदि ।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है ।

## लाल किताब वर्षफल 2025-2026

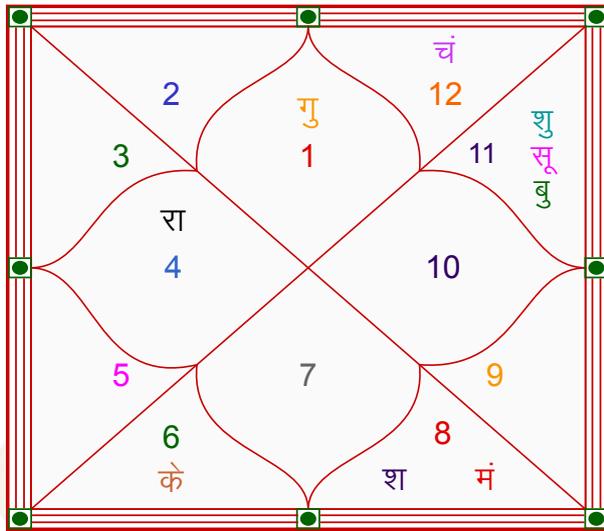
वर्तमान आयु - 44  
वर्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	---	---	---	मन्दा
चंद्र	---	---	---	मन्दा
मंगल	---	---	---	मन्दा
बुध	---	---	---	नेक
गुरु	---	हाँ	---	नेक
शुक्र	---	---	---	नेक
शनि	---	---	---	नेक
राहु	---	हाँ	हाँ	नेक
केतु	---	हाँ	---	मन्दा

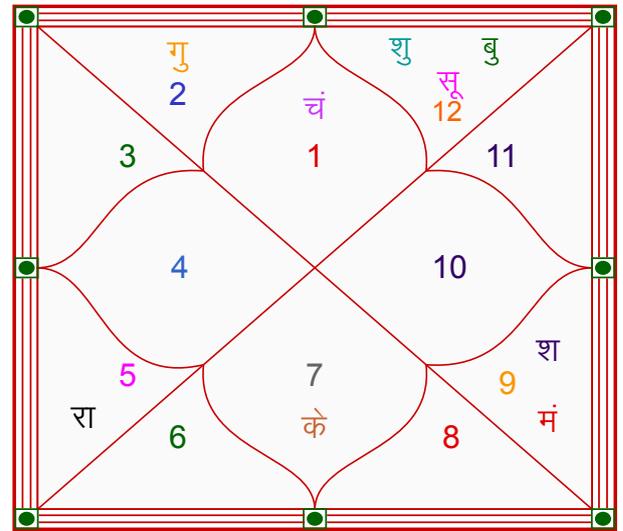
### भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	---	---	हाँ	---	हाँ	---	---	---	हाँ	---	---	---

### वर्ष कुंडली:लग्न:2025 – 2026



### वर्ष चन्द्र कुंडली 2025 – 2026



## लाल किताब वर्षफल 2025-2026

### सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष सुस्ती और लापरवाही से जीवन में तरक्की के कई अवसर खो सकते हैं। मांस-शराब के इस्तेमाल करना संतान को कष्ट होगा या संतान सुख की चिंता रहेगी। दूसरे लोगों को गाली देना, झूठी गवाही देना, लड़ाई-झगड़ा करना आपके लिये ठीक नहीं है इन बातों से बचें। सरकारी विभाग द्वारा दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. झूठ न बोलें, जूठा भोजन न खावें और न खिलावें।
2. मांस-मछली न खावें और शराब आदि न पिये मादक चीजों का सेवन न करें।

### चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके सभी काम तरस-तरस कर बनेंगे, विद्या संबंधी कामों में रुकावट हो सकती है, आपकी बात बदलने की आदत बनेगी, व्यतीत समय की बातें लोगों को सुना कर अपनी बढ़ाई करेंगे। 'अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना' जैसी कहावत आप पर चरितार्थ हो सकती है। मुकदमों में हार का भय रहेगा।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नीम के वृक्ष का पानी घर में रखें या आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में कायम करें।
2. 16 लीटर वर्षा का पानी कनस्तर में भरकर 4 शुद्ध चांदी के चौरस टुकड़े डाल कर रखें।

### मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको किसी विधवा स्त्री से झगड़ा नहीं करना चाहिये। वैवाहिक समस्याएं या परिवार में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। छोटे भाई अगर हों तो उस के लिये समय ठीक नहीं। आपकी जुबान से निकला अपशब्द लड़ाई-झगड़े का कारण होगा। आपको गुस्सा करना नुकसानदेह है, समय धैर्य से निकालें।

मंगल की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री को उपहार देकर चरण स्पर्श कर आर्शीवाद लें।

2. तन्दूर में मीठी रोटियां लगवा कर कुत्तों को खिलायें।

### बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष हर बुधवार का दिन और दोपहर (3 से 5 बजे) का समय शुभ रहेगा। आपका भाग्योदय होगा या तरक्की होगी, आलस्य से दूर रहें। आप अपनी बुद्धि के द्वारा अधिक लाभ अर्जित करेंगे। आपकी मान-सम्मान और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पैतृक सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। आपकी मित्रता से सबको लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मनी प्लांट, रबर प्लांट आदि चौड़े पत्तों के पेड़-पौधे घर पर न लगावें।
2. पीतल के खाली बर्तन बन्द या उल्टे न रखें।

### गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पढ़ने-पढ़ाने में रुचि या विद्या सम्बन्धित कामों से लाभ मिलेगा। आपको मान-सम्मान मिलेगा। पिता, दादा का रुतवा बढ़ेगा और उनका नाम रोशन होगा। नशों से दूर रहेंगे, सबके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। गुरु-साधू की सेवा करेंगे, सरकारी विभाग या शासन द्वारा भी आपको लाभ मिल सकता है।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बिना मेहनत का माल, गिपट या दान न लेवें।
2. किस्मत पर भरोसा रखना शुभ रहेगा।

### शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कन्या संतान का सुख मिल सकता है। आप अकारण पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आपमें अच्छे गुण बढ़ेंगे मगर आपकी गुप्त कार्य करने की आदत हो जाएगी। विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे, ससुराल पा के लोग सहायक होंगे। बहन-साली से भी लाभ मिलेगा स्त्री आपके कार्यों में साथ निभायेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

दा

## Sample

1. माता/पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार में बार-बार बदला-बदली न करें।

### शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 8 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका मनमौजी स्वभाव रहेगा। एक जगह बैठ कर करने वाले कामों से लाभ होगा। भाग-दौड़ के काम न करें। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। पुत्र संतान की खुशी मिले, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आपके मकान के साथ बंद गली हो उस मकान में आप रिहाइश नहीं रखेंगे तो लाभ होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अपने नाम पर मकान न खरीदें।
2. सांप न मारें।
3. मकान के मुख्य द्वार की दहलीज की पूजा करें।

### राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके बुजुर्गों को बहुत लाभ होगा, पिछला समय आपको आर्थिक तंगी का रहा हो तो इस वर्ष धन लाभ होगा। माता/सास से लाभ होगा। मकान वाहन सुख और सभी प्रकार के सुख के साधन उपलब्ध होंगे। सरकारी विभाग में या किसी संस्था में उच्च पद प्राप्त हो सकता है।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. माता/अपनी आयु से बड़ी स्त्री से अवैध संबंध स्थापित न करें।
2. गंगा नदी में स्नान न करें।

### केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष सोना न बिके और न ही गुम हो, खासकर विवाह समय मिली सोने की अंगूठी। यात्रा से हानि हो ऐसी आंशका है। चमड़ी, पांव में कष्ट हो सकता है। फिजूल खर्च बढ़ने की संभावना है। मामा को कष्ट का भय, संतान सुख की चिंता। शत्रु अकारण उभरेंगे और उनसे हानि का भय रहेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।

## Sample

2. शुद्ध सोने की अंगूठी बांये हाथ की अनामिका अंगुली में पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- 43 दिन रेत का तकिया बना कर रात को सिर के नीचे रख कर सोये।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

## लाल किताब वर्षफल 2026-2027

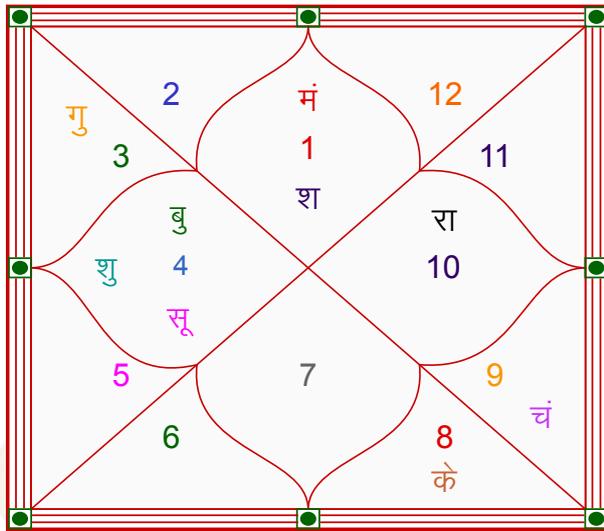
वर्तमान आयु - 45  
वर्तमान दशा - राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	---	---	---	नेक
चंद्र	---	---	---	नेक
मंगल	---	हाँ	---	नेक
बुध	---	---	---	नेक
गुरु	---	---	---	नेक
शुक्र	---	---	---	नेक
शनि	---	हाँ	---	नेक
राहु	---	---	---	नेक
केतु	---	हाँ	---	मन्दा

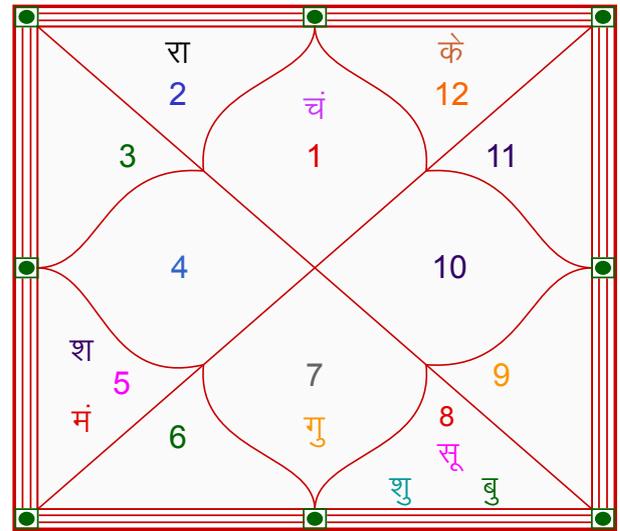
### भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	---	---	---	---	हाँ	हाँ	---	---	---	---	---	---

### वर्ष कुंडली:लग्न:2026 - 2027



### वर्ष चन्द्र कुंडली 2026 - 2027



## लाल किताब वर्षफल 2026-2027

### सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके धन का उपयोग दूसरे लोग करेंगे मगर आप उनसे लाभ उठायेंगे। परिवार में नये कार्य शुरू हो सकते हैं जो लाभदायक रहेंगे। वस्त्रों के काम से लाभ मिलेगा, रात्रि समय किये कार्यों से अधिक लाभ मिलेगा, सरकारी विभाग या समुद्र की यात्रा से भी लाभ मिलेगा। माता/सास से झगड़ा न करें।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चोरी न करें बल्कि चोरी की सोच मन में न लायें।
2. किसी भी स्त्री से झगड़ा न करें।

### चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष समाज के लोगों से हमदर्दी होगी। आपको पैतृक जायदाद का लाभ मिलेगा। तीर्थ यात्रा का अच्छा फल मिलेगा। आपकी संगीत विद्या में रुचि, धार्मिक विचार या धर्म-कर्म में रुचि अधिक रहेगी। आपको विनम्र स्वभाव रखना ही शुभ है जिससे आप तरक्की के शिखर पर पहुंच जायेंगे, धन-दौलत में बरकत होगी।

चंद्र की शुभा बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. झूठ न बोलें, झूठा भोजन न खिलाये और न खायें।

### मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष साहसी और शूरवीर बनेंगे, बुरे व्यक्ति के साथ भी नेकी का सलूक करेंगे, बड़े बहन-भाई से लाभ मिल सकता है। दूसरे व्यक्ति द्वारा की गई नेकी को सदा याद रखेंगे। परिवार और समाज को सच्चाई और नेकी की राह पर चलने की सलाह देंगे, लोहा/लकड़ी, मशीनरी आदि के कामों से लाभ मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बिना मेहनत का माल, दान या गिफ्ट न लेवें।
2. हाथी दांत कायम करें।

### बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष धन लाभ, परिवार में सभी सुखी और सुख के साधन मिलेंगे। कुल मिला कर राजयोग का समय है, विदेश यात्रा या विदेश से लाभ प्राप्त हो ऐसा योग है। बहन-बेटी, बुआ-साली से भी लाभ हो सकता है। माता से धन-जायदाद का लाभ होगा मगर मातृ सुख में कमी की आंशका रहेगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बेटी-बहन, बुआ-साली से झगड़ा न करें।
2. विधवा स्त्री से सम्बन्ध न रखें।

### गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष भाई-बन्धुओं का सुख मिलेगा, आप जिस पर मेहरबान होंगे उसको बहुत लाभ होगा। बुजुर्गों की सेवा में अपना धन-दौलत न्यौछावर कर सकते हैं। कारोबार में तरक्की मिलेगी। आँख की होशियारी से दूसरों के अच्छे-बुरे व्यवहार को जान लेंगे। आप धार्मिक कामों में अहम भूमिका निभायेंगे।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सूखा या कटा पीपल घर में न रखें।
2. घर में मन्दिर हो तो उसमें दोनों समय पूजा अर्चना करें।

### शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप में काम वासना की अधिकता के लक्षण है। दूसरी स्त्री आप पर मोहित हो सकते हैं। मामा-मौसी से लाभ मिलेगा, उत्तम भवन-वाहन का सुख मिलेगा, उत्तम भोजन-शयन का शौक रहेगा। आप अपने परिवार या शहर/गांव/देश में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, यात्रा अधिक होगी और यात्रा से लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें, अनैतिक संबंध न रखें।

2. बुजुर्गी मकान की दहलीज ठीक रखें।

### शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कैमिस्ट या डाक्टर, इंजीनियरिंग, से संबंधित कामों से लाभ हो सकता है। लोहा-लकड़ी के काम भी लाभ देंगे, माता-पिता के पास धन की बढ़ोत्तरी होगी। आपकी जायदाद बढ़ने की आशा है। सरकारी विभाग से लाभ मिलेगा और उच्चाधिकारियों से अच्छे संबंध बनेंगे।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. परिवार में कोई खुशी का समय हो तो बाजे न बजवायें।
2. शराब आदि पीना, मांस-मछली खाने और इश्कबाजी से दूर रहें।

### राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका हर काम सरहानीय होगा। सरकारी विभाग में नौकरी करते हैं तो उच्च पद मिले या सरकार द्वारा आपको लाभ होगा। आपके सिर के बाल सफेद होने शुरू हो जायें या हो चुके हों तो आपकी तरक्की की निशानी है। आपका चरित्र भी ऊंचा होना शुरू हो जायेगा और मान-सम्मान बढ़ेगा।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़े अर्थात् नंगा सिर न रखें।
2. मौके के अधिकारी से झगड़ा न करें।

### केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपके लिए इस वर्ष शराब-मीट का सेवन हानिकारक है। खराब चाल चलन या अनैतिक संबंध गुप्त रोग देगा। संतान सुख चाहते हैं तो चाल-चलन ठीक रखें। संतान की चिंता रहे ऐसी आशंका है। कारोबार में हानि और यात्रा में परेशानी या अपव्यय होगा। किसी को अपना भेद न बतायें, कारण आपका भेदी तबाह करेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काले-सफेद कंबल धर्म स्थान में देवें (संतान की लंबी आयु के लिए)।
2. काले-सफेद कंबल के टुकड़े में केतु के साथ बैठे ग्रह की चीज बांध कर शमशान में दबायें

## Sample

(जब बच्चे जीवित न रहते हों)।

(1) सूर्य—गेहूँ, (2) चंद्र—चावल, (3) मंगल—दाल मसूर, (4) बुध—मूंग, (5) गुरु—चने की दाल, (6) शुक्र—चरी, (7) शनि—काली उड़द, (8) राहु—जौ, (9) केतु—काले—सफेद तिल।

3. कुत्ते को भोजन का हिस्सा दें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 43 दिन कुत्तों को भोजन का हिस्सा खिलायें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

## लाल किताब वर्षफल 2027-2028

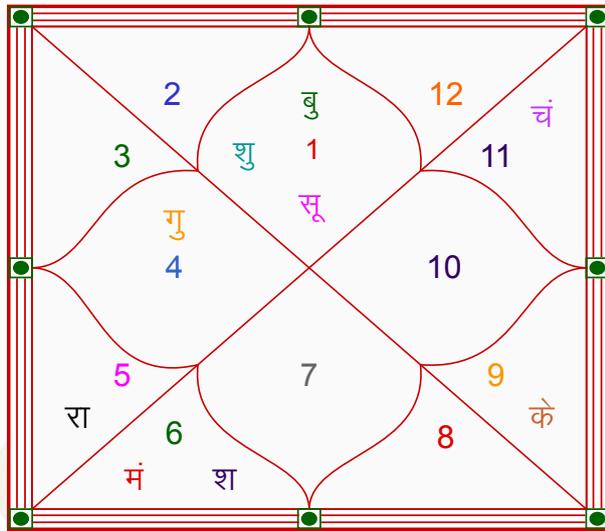
वर्तमान आयु - 46  
वर्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	---	हाँ	---	नेक
चंद्र	---	---	---	नेक
मंगल	---	हाँ	---	नेक
बुध	---	हाँ	---	नेक
गुरु	---	हाँ	---	नेक
शुक्र	---	हाँ	---	मन्दा
शनि	---	हाँ	---	मन्दा
राहु	---	---	---	मन्दा
केतु	---	---	---	नेक

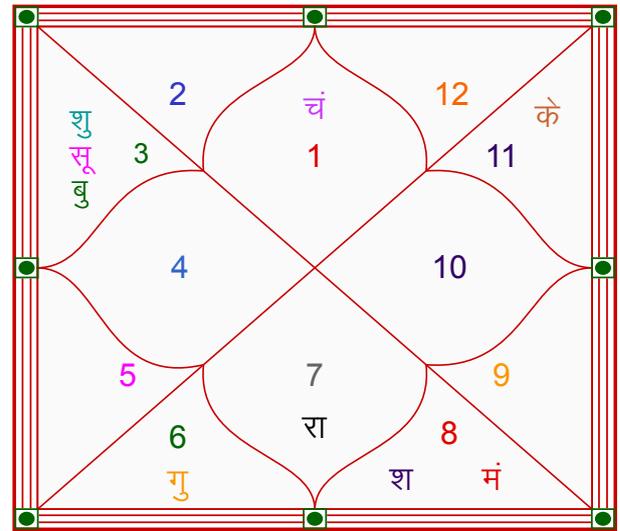
### भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	---	हाँ	हाँ	---	---	---	---	हाँ	---	---	---	हाँ

### वर्ष कुंडली:लग्न:2027 – 2028



### वर्ष चन्द्र कुंडली 2027 – 2028



## लाल किताब वर्षफल 2027-2028

### सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका तेज व प्रताप बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, परोपकार की भावना रहेगी, आप दृढ़ निश्चयी, नशों से दूर रहेंगे। अधिक मेहनत करके आप अपना भाग्य चमकाएंगे। सरकारी विभाग में रूके काम बनेंगे। सरकारी अधिकारियों से अच्छे संबंध रहेंगे और उनसे लाभ मिलेगा।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब आदि न पियें, मांस-मछली का भोजन न करें।
2. सूर्योदय से सूर्यास्त तक स्त्री से शारीरिक संबंध न रखें।

### चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से लाभ होगा, सुख के साधन मिलेंगे, आपको स्त्रियों द्वारा सहयोग प्राप्त होगा, माता-संतान का सुख मिलेगा, कोर्ट, इंजीनियरिंग, डाक्टरी से संबंधित कामों से लाभ मिलेगा, कारोबार में बरकत होगी। रात्रि समय विद्या पढ़ने या रात्रि समय विद्या से संबंधित कामों से लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. विद्या पढ़ने में अरूचि न रखें।

### मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष परिवार में खुशी का योग बनेगा, छोटे भाई की मदद करेंगे, शत्रुओं में कमी होगी या शत्रु दबे रहेंगे, साहुकारा (लिखा-पढ़ी करके ब्याज पर रुपया-पैसा देना) करने से लाभ होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे और दूसरों को भी प्रसन्न रखेंगे। साधू-संन्यासी की तरह जीवन व्यतीत करेंगे और जनता की सेवा करेंगे। परिवार व समाज में सम्मान बढ़ेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. भाई से झगड़ा न करें।

2. पुत्र का जन्म हो तो जन्म पर मीठा या मिठाई न बांटे यदि मिठाई बांटनी हो तो मिठाई के साथ नमकीन चीज जरूर दें।

### बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विदेश यात्रा या विदेश से सम्बन्धित कामों से लाभ हो सकता है। आपके मुंह से निकली हुई बात में दम होगा, आप दूसरों की परवाह नहीं करेंगे। मधुर भाषा बोलेंगे, कल्पनाशील विचार होंगे। आप पर दूसरे लोगों का प्रभाव रहेगा। आप परिवार के झगड़ों में सुलह करने में भूमिका निभाएंगे।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अण्डा-पेस्ट्री आदि अण्डे से बनी चीजें न खावें।
2. शराब-बीयर न पियें, मांस-मछली का भोजन न करें।

### गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अचानक धन लाभ होगा। दिमाग में आयी बात को अवश्य पूरा करेंगे। आपको हर कोई मान-सम्मान देगा। सभी की मदद करने से और उच्च पद/तरक्की की प्राप्ति होगी। बुजुर्गों से सुख मिलेगा और रूतबा दिनों-दिन बढ़ेगा। वाहन, मकान का सुख मिलेगा और परिवारों में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बच्चों के टुटे हुए खिलौने घर में न रखें।
2. निःसंतान व्यक्ति से सम्बन्ध न रखें।

### शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको, परिवार का मुखिया बनना अवनति का कारण बनेगा। चाल-चलन खराब हुआ तो उसका असर कारोबार या विद्या आदि पर पड़ सकता है। आपके कुछ काम अधूरे रह सकते हैं। मान-सम्मान या उच्च पद नष्ट हो सकता है। पत्नी की किस्मत न साथ देगी और संतान की चिंता रह सकती है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. जौ या सरसों या चरी दान करें।

2. गाय, कौवे और कुत्ते को भोजन का हिस्सा दें।

### शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 6 में अशुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष पूर्णिमा के दिन कोई नया काम न शुरू करें। कारण, इस दिन शुरू नये काम से लाभ न होगा। चमड़े का समान मुफ्त/गिफ्ट न लें इससे आपका मान-सम्मान कम होगा या अकारण बेइज्जती का कारण बनेंगे। परिवार में किसी को गुर्दे या पथरी रोग का भय रहेगा।

शनि की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काले कुत्ते की सेवा/पालन करें।
2. नया जूता किसी को पहनाकर पहनें या खरीदने के 6 दिन बाद पहनें।
3. बादाम गंदे नाले में डालें।

### राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों में परेशानी, पत्नी से झगड़ा-तलाक या जुदाई तक हो सकती है जो आगे चल कर आपको कष्टकारी बनेगी। दूसरी पत्नी से संतान सुख नहीं मिलेगा इसलिये पत्नी से संबंध विच्छेद न करें। पहली संतान (लड़के) का सुख शक्की है, भाई अमीर निःसंतान या उसे संतान की चिंता रहेगी।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध चांदी का ठोस हाथी चांदी की प्लेट पर खड़ा करके घर में रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज के नीचे चांदी की पत्ती लगाएं।
3. अपनी पत्नी से दो बार विवाह (फेरे) करें (पुत्र सुख के लिए)

### केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष प्रगति मिले ऐसी संभावना है। तबदीली का चांस कम है। यात्रा से लाभ होगा। प्रदेश में भी कुछ समय व्यतीत हो सकता है। अपनी संतान के साथ या उसकी सलाह से कोई काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ होगा। आप जिसको पुत्र होने का आशीर्वाद देंगे उसके घर पुत्र पैदा होगा।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

दा

## Sample

1. चोर-डाकू का साथ न रखें।
2. कुत्ते को चोट न मारे।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- जौ या सरसों या चरी या सतनाज (7 धान) दान देवें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

## लाल किताब वर्षफल 2028-2029

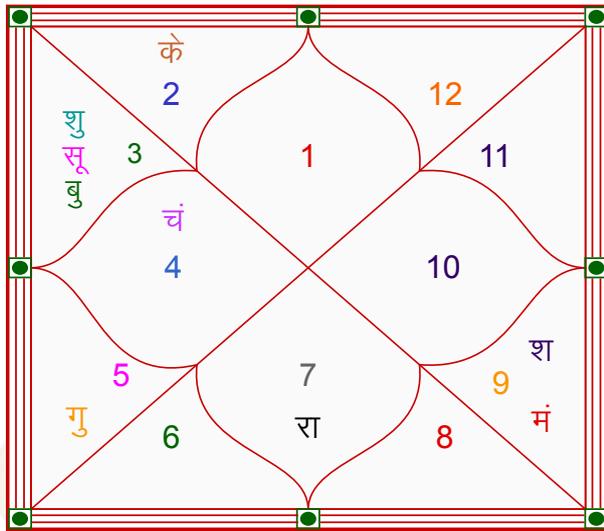
वर्तमान आयु - 47  
वर्तमान दशा - राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	---	---	---	मन्दा
चंद्र	---	हाँ	---	नेक
मंगल	---	---	---	नेक
बुध	---	---	---	मन्दा
गुरु	---	---	---	नेक
शुक्र	---	---	---	मन्दा
शनि	---	---	---	नेक
राहु	---	---	---	मन्दा
केतु	---	हाँ	---	नेक

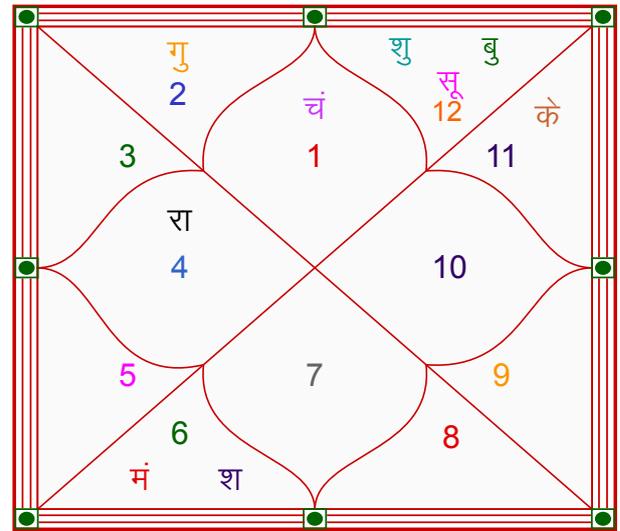
### भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	---	---	---	---	---	---	हाँ	---	---	---	हाँ

### वर्ष कुंडली:लग्न:2028 - 2029



### वर्ष चन्द्र कुंडली 2028 - 2029



## लाल किताब वर्षफल 2028-2029

### सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी किस्मत में कुछ उतार-चढ़ाव आ सकता है, परिवार में बीमारी पर धन का अपव्यय होगा। गुप्त शत्रु दबे रहेंगे, धन आपकी आंखों के सामने चोरी हो सकता है। ननिहाल पर कुछ समय अशुभ रहेगा। भाई-बंधुओं से धोखा हो सकता है सतर्क रहें। अधिक मेहनत करने से लाभ मिलेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. माता या माता समान स्त्री के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त करें।
2. परस्त्री से शारीरिक संबंध न रखें।

### चंद्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप राजसी टाट-बाट भोगेंगे या समय सूखपूर्वक गुजरेगा, समुद्री सफर या समुद्र से संबंधित कामों से लाभ होगा। कार्य करने से पहले किसी व्यक्ति की सलाह लेकर कार्य शुरू करना शुभ रहेगा। कोई अमानत आपके पास रख कर जाएगा वह उसे वापिस लेने नहीं आयेगा या अचानक धन-लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. माता या माता समान स्त्री से झगड़ा न करें।
2. दूध-पानी का व्यापार न करें।

### मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति में वृद्धि और उसका लाभ मिलेगा, परिवार में धार्मिक उत्सव भी हो सकता है। नौकरी-व्यापार में अधिक धन लाभ मिलेगा। विवाहित भाई के साथ रहेंगे या उसकी पत्नी की सेवा करेंगे तो आप समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की हैसियत से उभरेंगे और आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. परदेश में रिहाईश न करें।

2. भाई से झगड़ा न करें।

### बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बहन-लड़की, साली-बुआ से धन लेकर कोई कार्य किया तो कार्य में हानि हो सकती है। आपके भाग्योदय में रूकावट आ सकती है या आप कर्जदार हो सकते हैं। जबान के रोग होने का भय है। भाई-बहन की चिंता या उनसे झगड़ा करने पर हानि हो सकती है। नाड़ियों चमड़ी रोग का भय रहेगा।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दूर्गा पूजन या कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों) की सेवा करें।
2. तोता पाले या तोते को चूरी खिलायें।

### गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष तरक्की हो या मान-सम्मान मिलेगा। इस वर्ष अगर आपके परिवार में लड़का पैदा होता है तो परिवार की अथाह तरक्की होना शुरू हो जाएगी। पिता-दादा की मदद शक्की हो सकती है। वर्ष शुरू होते ही आपकी तरक्की होगी। वंश वृद्धि/संतान सुख प्राप्त होगा। लेखन द्वारा लाभ मिलेगा।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. नाव के कामों से सम्बन्ध न रखें।
2. नास्तिक न बनें।

### शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष राग-रंग में आपकी रुचि आपके लिये ठीक नहीं रहेगी। पत्नी का क्रोध बढ़ सकता है। खराब चाल-चलन से हानि का भय और मान-सम्मान को धक्का लगेगा। संतान की चिंता या संतान को शरीर कष्ट भी भोगना पड़ सकता है। दूसरे के घर में भी आपका निवास हो सकता है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पत्नी या स्त्रियों की सेवा करें।
2. मंगल की चीजों का प्रयोग करें।

## शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना रहेगी, भाई-बंधुओं का सहयोग मिलेगा। कर्ज का बोझ आप में नहीं रहेगा। पैसे के प्रति आप की दौड़ नहीं रहेगी। पत्नी के नाम पर काम शुरू करने से लाभ होगा, मकान-वाहन का सुख मिलेगा। तीसरा रिहाइशी मकान न बनावें वरना स्वास्थ्य को खतरा होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न रखें।
2. घर की छत पर ईंधन-चौगाठ आदि न रखें।

## राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बिजली या पुलिस विभाग से संबंधित कामों में हानि का भय, ट्रांसपोर्ट का काम करने से हानि या आयु शकती हो सकती है। साझेदारों से झगड़ा। कारोबार में उथल-पुथल भी हो सकती है। पत्नी को सिर दर्द का रोग हो सकता है। पत्नी से तनाव या पत्नी से जुदाई भी हो सकती है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नारियल का दान करें।
2. शुद्ध चांदी की दो ईंटे घर में कायम करें।
3. प्लास्टिक की डिब्बी में शुद्ध चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

## केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष यात्रा करने से धन लाभ व मान-सम्मान बढ़ेगा, दलाली या कमीशन एजेंट के कार्य से लाभ होगा। आई-चलाई चाहे लाखों-करोड़ों रूपयों की हो मगर हिस्से में दलाल की दलाली की तरह धन लाभ होगा। सरकार से वजीफा या सरकारी विभाग से धन लाभ हो सकता है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चान चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. नकली सोना न पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

## Sample

- माता या माता समान स्त्री को उपहार दे कर आर्शिवाद लेवे।  
(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

## लाल किताब वर्षफल 2029-2030

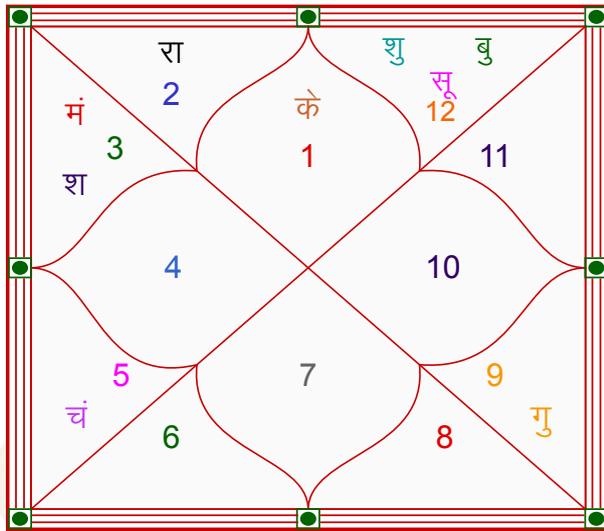
वर्तमान आयु - 48  
वर्तमान दशा - केतु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	---	---	---	नेक
चंद्र	---	---	---	नेक
मंगल	---	---	---	नेक
बुध	---	---	---	मन्दा
गुरु	---	---	---	नेक
शुक्र	---	---	---	नेक
शनि	---	---	---	नेक
राहु	---	हाँ	---	नेक
केतु	---	हाँ	---	नेक

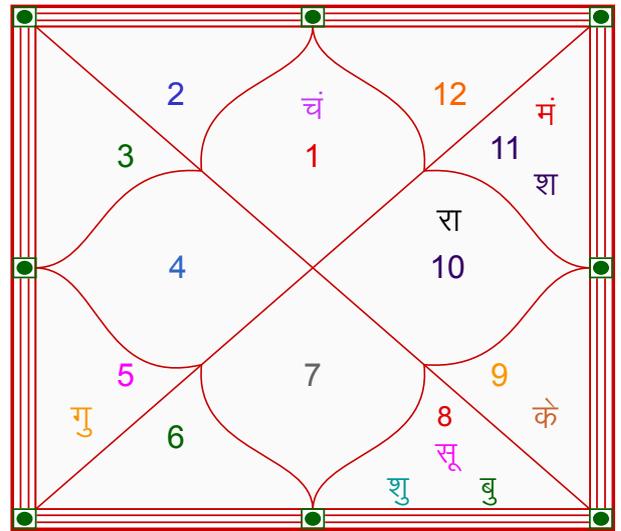
### भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	---	---	---	हाँ	---	---	---	हाँ	---	हाँ	---	---

### वर्ष कुंडली:लग्न:2029 - 2030



### वर्ष चन्द्र कुंडली 2029 - 2030



## लाल किताब वर्षफल 2029-2030

### सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप साधू न बन कर जागीरदार बनेंगे, बड़े-बड़े कामों से धन लाभ मिलेगा, गुप्त विद्या, आध्यात्म में रुचि रहेगी। विदेश संबंधी कामों से भी लाभ मिलेगा या विदेश यात्रा भी हो सकती है। सुख की नींद मिलेगी, बुजुर्गों का आपके ऊपर आशीर्वाद रहेगा। आपके परिवार में चहल-पहल रहेगी।

सूर्य की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. आपके पास किसी के द्वारा रखी चीज़ पर नियत खराब न करें।

### चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार वालों को सोने-चांदी का लाभ होगा, विद्या का लाभ होगा, आप दूसरों के कष्ट अपने पर झेलेंगे, दूसरों पर परोपकार करेंगे, लड़ाई-झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे उस व्यक्ति की जीत होगी। आपकी बहुत प्रसिद्धि होगी और समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. हर कार्य में किसी की सलाह जरूर लेवें।
2. पाप के कामों में अपना हस्तोप न करें।

### मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष दूसरों की सहायता कर के प्रसन्नता प्राप्त होगी मगर जरूरी नहीं कि दूसरों की सहायता के बदले में आपको सम्मान मिलेगा, आपको कसरत करने या जिम आदि जाने का शौक रहेगा, मुकाबले की विद्या (प्रतियोगी परीक्षा) में आपकी जीत होगी, नर्म स्वभाव रखेंगे तो आपको लाभ मिलेगा। धन-परिवार/संतान का सुख मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. पेट का विशेष ध्यान रखें।
2. हाथी दांत न रखें।

### बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष मादक द्रव्यों या चीजों का प्रयोग आपको बदजुबान बना सकता है जो आपके लिये हानिकारक होगा, ख्याली कारोबार (सोच-विचार कर करने वाले काम) या सद्दा/जुआं, लाटरी, शेयर आदि आपके लिये अनुकूल नहीं है। भ्रम या अज्ञानता के कारण आपका नुकसान हो सकता है।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. स्टील की बेजोड़ अंगूठी बांये हाथ की कनिष्ठिका या मध्यमा अंगुली में पहनें।
2. खाली घड़ा ढक्कन लगाकर जल प्रवाह करें।

### गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अपने पूर्वजों के द्वारा लाभ होगा, ज्योतिष और गुप्त विद्याओं में रूचि रहेगी। परिवार के लोगों का मान-सम्मान बढ़ेगा। आप दुनिया में अपने परिवार का नाम चमकाएंगे। जौहरी/सर्राफी के कामों से लाभ हो सकता है। आपकी आदत राजाओं जैसी बनेंगी। प्राण जाये पर वचन न जाये ही आपका धर्म होगा।

गुरु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किया हुआ वायदा पूरा करें।
2. सोना गिरवी न रखें।

### शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से आपकी इस वर्ष ज्योतिष विद्या और गुप्त विद्याओं में रूचि रह सकती है, परिवार का पालन-पोषण करने में आपका अधिक ध्यान रहेगा। पत्नी की किस्मत आप के आड़े समय में साथ देगी, ऐशो आराम के साधन मिलेंगे। चित्रकला-गायन का शौक भी हो सकता है। आपका मान-सम्मान बरकरार रहेगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. पत्नी के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

### शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके हाथों से खर्च अधिक होगा या धन की कमी रहेगी। आप सबकी मदद करेंगे मगर लोग आपका कार्य बिगाड़ सकते हैं। लोहा, मशीनरी से संबंधित कार्यों से लाभ होगा। आप साहसपूर्ण कार्य करेंगे जिसके कारण आपको जोखिम भी उठाना पड़ सकता है।

शनि की शुभता बढ़ाने निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मछली का शिकार न करें, मछली न खायें। शराब न पिये।
2. कीकर या बेरी का वृक्ष घर में न लगायें।

### राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष ननिहाल या ससुराल से लाभ मिलेगा। किस्मत का असर झूले की तरह ऊपर-नीचे चलने वाला होगा जो कि अच्छा या बुरा दोनों ही तरह का हो सकता है। चोरी के माल से सावधान रहें चोरी का इल्जाम लगने का भय होगा, धन कोष में वृद्धि होगी। दान और मुफ्त माल से परहेज करेंगे।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सट्टा-जुआ आदि न खेलें।
2. धर्म स्थान में रिहाईश न करें या धर्म स्थान में न जायें।

### केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष तरक्की का योग है। मगर तबदीली का योग कम ही है। यात्रा के आदेश पत्र के बावजूद यात्रा न होगी या बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ेगा। पिता-गुरु की सेवा में रूचि रहेगी। परिवार में किसी स्त्री के संतान पैदा होने का योग हो तो उसे पुत्र लाभ हो सकता है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बकरी न पालें और बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिर के मकान में रिहाईश न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- खाली घड़ा ढक्कन देकर जल प्रवाह करें या स्टील की अगुंठी बायें हाथ की कनिष्ठका अंगुली में

## Sample

पहनें ।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

## लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।
2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।
3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।
4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।
5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।
6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर दें।
7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।
8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।
9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें।
10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये।
11. बुजुर्गों के रीति-रिवाजों को न तोड़ें और संस्कार पूरे करें।